भारत की भौगोलिक एवं राजनीतिक पृष्ठभूमि
(1633 ई. से 1763 ई. तक)

डॉ. अंजलि दुबे
अतिथि विद्वान, अर्थशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

भारत, एशिया के दक्षिण में एक प्रायद्वीप है। भारत के प्राकृतिक सीमांत पर्वत और सागर है। इस देश के इतिहास के निर्माण में इस तथ्य ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पश्चिम में सिन्धु के मुहाने से लेकर पूर्व में गंगा के डेल्टे तक केन्द्रीय और दक्षिणी भारत के विशाल त्रिकोणात्मक प्रायद्वीप का स्पर्श अरब-सागर तथा हिन्द महासागर की जल-तरंगे करती हैं। टॉमस स्टीफेन्स प्रथम अंग्रेज या जिसने भारत भूमि पर पदार्पण किया। मुगल साम्राज्य के पतोन्मुख हो जाने के उपरांत कोई प्रबल केन्द्रीय सत्ता न थी जो कंपनी पर नियंत्रण रखती। अतः ईस्ट इंडिया कंपनी ने भारतीयों की सेनायें तैयार कर, हिन्दु तथा मुस्लिम शासकों को आपस में लड़ा कर और भारतीय राजाओं के पारस्परिक झगड़ों में भाग लेकर भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य की स्थापना की फलतः ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया।

मुख्य शब्द - भारत, भौगोलिक, राजनीतिक, ब्रिटिश, दक्कन, टॉमस स्टीफेन्स, ब्रिटिश, फ्रान्सीसी।

भारत का एक नाम हिन्दु स्थान भी है, जिसका अपभ्रंश हिन्दुस्तान प्रचलित है। भारत को उपमहाद्वीप कहा जाता था। भारत भूमि एशिया के दक्षिण में एक प्रायद्वीप है। यह भूमध्य रेखा के उत्तर में 8°4‘ से 37°6‘ उत्तरी अक्षांश रेखाओं तथा 68°7‘ से 97°25’ पूर्वी देशान्तर रेखाओं के मध्य स्थित है।[1]

भारत के प्राकृतिक सीमांत पर्वत और सागर है। इस देश के इतिहास के निर्माण में इस तथ्य ने काफी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पश्चिम में सिन्धु के मुहाने से लेकर पूर्व में गंगा के डेल्टे तक केन्द्रीय और दक्षिणी भारत के विशाल त्रिकोणात्मक प्रायद्वीप का स्पर्श अरब-सागर तथा हिन्द महासागर की जल-तरंगे करती हैं। सिन्धु के पश्चिम से लेकर अराकान (बंगाल की खाड़ी के पूर्वी मोड़ पर स्थित भू-प्रदेश) के तट तक एक अर्द्ध-गोलाकार रूप में पर्वत खड़े हुए है। इस प्राकृतिक प्रकोट का प्रारंभ सिंध प्रदेश की बंदरगाह कराची के उत्तर में स्थित कीर्थ पर्वत-श्रृंखला से होता है। कुएटा के निकट यह पर्वत श्रृंखला कुछ पूर्व की ओर झुकती है किन्तु सुलेमान पर्वत-माला के बाद यह फिर उत्तर-दिशा में आगे बढ़ती है। इस पर्वत माला के हिन्दुकुश एवं कराकुरम् पर्वत काफी ऊंचे है। जिनके कुछ शिखर तो 28,000 फुट तक ऊंचे हैं। इस पर्वत माला के आगे भीमाकार हिमालय-पर्वत स्थित हैं जो आसाम के उत्तरी सीमांत तक फैला हुआ है। इसका 29,002 फुट ऊंचा शिखर ‘गौरीशंकर’ (माउण्ट एवरेस्ट) विश्व का उच्चतम शिखर है।

ISSN 2393-8

प्राकृतिक दृष्टि से भारत तीन क्षेत्रों में विभक्त है - 1. हिमालय का पर्वतीय क्षेत्र, 2. गंगा-सिन्धु का और 3. दक्षिणी पठार।

भारत के उत्तर में हिमालय पर्वत श्रेणी 2500 कि.मी. की लम्बाई में पूर्व से पश्चिम तक फैला है। चौड़ाई 240 से 320 कि.मी. है। इस पर्वत श्रेणी के पहाड़ों घाटियों, पठारों आदि का कुल क्षेत्रफल 5 लाख था। मध्यवर्ती हिमालय की तलहटी में मलेरिया के कीटाणुओं एवं बाघ-चीतों से भरा वन-प्रान्त है जिसे तराई है। इन वन-प्रान्तों की तलझाड़ियों के नीचे प्राचीन बौद्ध नगर सोये पड़े हैं। हिमालय के पूर्वी छोर पर समकोण पर्वत श्रेणियां, दक्षिण में अराकन के समुद्र-तट की ओर चली गईं। इस प्रकार भारत की सीमा रक्षा का भार प्र ने स्वयं उठा रखा है। हिमालय के सबसे निचले दर्रे भी 17,000 फुट ऊंचे है जिनके उस पार तिब्बत की अनुप पहाड़ी भूमि है। इन दर्रो के रास्ते केवल आदियुगीन व्यापार ही संभव है। शत्रु सेना तो केवल पश्चिम एवं उत्तरी-पश्चि प्रदेश से ही भारत में प्रवेश कर सकती है और इनके लिए शत्रु को खैबर खुर्रम तथा बोलन दर्रों की शरण लेनी जिनके द्वारा ईरानी पठार से चलकर पंजाब के लहलहाते मैंदानों में पहुंचा जा सकता है। इन दर्रों की भयंकर घा से गुजर कर ही आर्य, हूण, अफगान, फारसी और मुगल भारत वर्ष पहुंचे तथा उन्होंने इस वैभव सम्पन्न देश सम्पदा को लूटा।

पर्वत तथा सागर की प्राकृतिक सीमा से घिरे भारत के सीमान्त की सापेक्षिक स्थिति का अध्ययन आवश्यक है। भारत वर्ष को मुख्य रूप से दो भागों में बांटा जा सकता है - (1) उत्तर (2) दक्कन। उत्तर में हिम पर्वत माला से अभिरक्षित विशाल जलस्थल, मैदानों तथा मालवा और बुंदेलखंड के विश्रृंखलित मध्यवर्ती पठा हिन्दुस्तान कहा जाता हैं। दक्षिण के त्रिकोणात्मक प्रायद्वीप को 'दक्कन'। हिन्दुस्तान और दक्कन दोनों ही शब्द दु से विस्तृत और संकुचित अर्थों में प्रयुक्त हुए है। विस्तृत अर्थ में हिन्दुस्तान से अभिप्राय है विन्ध्य पर्वत के का सम्पूर्ण भू-खण्ड तथा संकुचित अर्थ में गंगा का ऊपरी भू-भाग। इसी प्रकार विस्तृत अर्थ में दक्कन से अभि नर्मदा के दक्षिण का सम्पूर्ण क्षेत्र तथा संकुचित अर्थ में नर्मदा एवं कृष्णा नदियों के बीच का भू-भाग। कुछ इतिहास ने 'हिन्दुस्तान' शब्द को भारतवर्ष के पर्याय के रूप में प्रयुक्त किया है।[2]

भारतवर्ष के विशाल उपजाऊ मैदान जो हिमालय की दक्षिण तलहटी से प्रारंभ होकर पश्चिम में काठिया तक चले गये तथा पूर्व में बंगाल की खाड़ी के उत्तरी तट तक। हिमालय से निकलने वाली सिन्धु एवं गंगा न इन मैदानों को जीवनदान करती हैं। 1,800 मील लम्बी सिंधु, हिमालय के उत्तर से निकलती है और 500 मील पर्वत-माला के पीछे की ओर गहरे नाले के रूप में बहती है। उसके उपरांत यह पर्वतीय दीवार को भेद कर द की ओर मुड़ती है और पंजाब की चारों विशाल नदियों की जल राशि को अपने में समेटकर मंथर गति से आगे ब है। सिन्ध प्रदेश के अतुल सौन्दर्य का निरीक्षण करती हुई अंत में कई जलमार्गों द्वारा अरब सागर में जा मिलती दूसरी ओर गंगा अपनी तीन उपनदियों (जमुना, घाघरा और गण्डक) को आत्मसात् करके 1,500 मील तक हिम पर्वत-माला के समानान्तर बहती है तथा उत्तर भारत के विशाल मैदानों को हरा-भरा बनाकर बंगाल की खाड़ी में जाती है। सागर में विलीन होने से कुछ पहले गोआलुंदो नामक स्थान पर ब्रह्मपुत्र नदी भी इसमें आ मिलती है। ब्रह्

अपने तिब्बती नाम 'त्सोपो' से सिन्धु के उद्गम से कुछ मील दूर हिमालय से प्रकट होती है और लगभग एक हजार मील तक ब्रह्मपुत्र नदी की विपरीत दिशा में बहकर, पर्वत-माला के पूर्वी पार्श्व से मुड़ती है तथा काफी चक्करदार रास्ते से पहले पश्चिम की ओर बढ़ जाती है। अंत में आसाम की घाटियों से गुजरती हुई बंगाल के निचले मैदानों में पहुंच जाती है। इन दोनों नदियों की सम्मिलित जल-राशि इतनी ज्यादा है कि इनका मिला-जुला डेल्टा 50,000 वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला हुआ है। राजपूताना के उत्तर-पूर्व की ओर बढ़ती हुई अरावली पर्वत-श्रेणी सिन्धु एवं गंगा की विशद जल-व्यवस्था को दो भागों में बांटती है। इस पर्वत श्रेणी के पश्चिम की ओर जलधार नहीं पहुंच पाती, इसलिए यह भाग मरूस्थल कहा जाता है। जहां आज मरूस्थल है आदिकाल में वहां सागर का जल किलोल करता था। इस मरूस्थल में पहले 'हाकारा' नामक नदी बहती थी जो सिंधु के समानान्तर बढ़ती थी और इस विशाल भू-खण्ड को जलदान करती थी। यह नदी 18वीं शताब्दी तक मौजूद थी।

मालावार के तट पर इस पठार की खड़ी दीवार पश्चिमी घाट की पर्वत-माला कहलाती है तथा कोरोमण्डल के तट पर इसका सीधा उतार पूर्वी घाट की पर्वत-माला कहलाती है।[3] इन घाटों के तल और सागर के बीच का पात्र काफी उपजाऊ है जिस पर सागर मार्ग से आने वाले यूरोपियों ने अपनी प्रारंभिक फैक्टरियां स्थापित की तथा प्रारंभिक अड्डे बनाए। बम्बई की ओर समतल पट्टी काफी तंग है क्योंकि पर्वत-माला और सागर के बीच का फासला कहीं भी चालीस मील से ज्यादा नहीं है। मद्रास की तरफ यह फासला काफी अधिक है, इसलिए वहां की समतल पट्टी काफी चौड़ी है। सुदूर दक्षिण पूर्व में भी मकरा एवं तिन्नेवेली के मैदान अत्यधिक चौड़ाई लिए हुए हैं कुमारी अन्तरीय दो सौ मील की दूरी पर पूर्वी घाट पश्चिम की ओर मुड़ जाते है तथा नीलगिरी की तिरछी पर्वत-माला के माध्यम पश्चिमी घाट में जा मिलते है।[4]

जनीतिक पृष्ठभूमि

टॉमस स्टीफेन्स प्रथम अंग्रेज या जिसने भारत भूमि पर पदार्पण किया और कुछ समय तक भारत में रहा र इंग्लैण्ड वापस लौट गया। टॉमस स्टीफेन्स के पश्चात फिच तथा न्यूवेरी नामक दो अंग्रेज व्यापारी 1583 ई. में ल मार्ग से भारत आये एवं अपने साथ लूड़िस नामक एक जौहरी को भी लाए जिसने मुगल सम्राट के यहां नौकरी र ली और फिच लंका मलक्का से अत्यंत कठिन यात्राएं करता हुआ 1591 ई. में इंग्लैण्ड लौट गया। फिच की यात्राओं अंग्रेजों को बड़ा प्रोत्साहन मिला और 1591 ई. में जेम्स लैंकास्टर अंग्रेज ब्राजील तथा पश्चिमी द्वीप समूह तट पर पहुंचा। किन्तु 1594 ई. में जोन मिडनाल नामक अंग्रेज व्यापारी भारत पहुंचा और वह सात वर्षों तक पूर्वी प्रदेशों रहा एवं मुगल सम्राट अकबर के दरबार में भी उसे जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।[5]

इन व्यक्तिगत यात्राओं से अंग्रेजों को बड़ा प्रोत्साहन मिला। अतएव इंग्लैण्ड के कुछ व्यापारियों ने आशा तरीप के मार्ग से व्यापार करने का निश्चय किया एवं महारानी एलिजाबेथ से व्यापार का आज्ञा पत्र प्राप्त करने लिए प्रार्थना की। 31 दिसम्वर सन् 1600 ई. को महारानी ने चार्टर स्वीकार कर लिया और इस प्रकार अंग्रेजों एक व्यापारिक कंपनी का गठन किया।[6]

सन् 1633 ई. में राल्फ कार्टराइट नामक अंग्रेज ने महानदी के डेल्टा में हरिहरपुर तथा उड़ीसा और बंगाल की सीमा पर स्थित बालासोर नामक स्थान पर अपनी व्यापारिक कोठियां स्थापित कर ली। अंग्रेज कंपनी का ब्रौटन नामक एक डॉक्टर 1645 ई. में आगरा आया एवं उसने 1650 ई. में बंगाल नवाब से एक फरमान प्राप्त किया। इस फरमान के अनुसार कंपनी के जहाज बंगाल से कर मुक्त व्यापार कर सकते थे। अंग्रेजों ने हुगली में अपनी एक व्यापारिक कोठी की स्थापना की इस प्रकार अंग्रेज बंगाल, बिहार, उड़ीसा में रेशम, गोरा, शक्कर आदि का व्यापार करने लगे।[7]

सन् 1651 ई. में कंपनी को बंगाल नवाब के फरमान अनुसार बंगाल में कर मुक्त व्यापार करने का अधिकार प्राप्त हो गया था। अतः व्यापारिक कोठी के अंग्रेज अपने इस अधिकार पर विशेष बल देने लगे जिससे मुगल अफसरों ने कालान्तर में इस विषय पर भिन्न दृष्टिकोण से विचार करना आरंभ किया कि व्यापार में वृद्धि को ध्यान रखते हुए अंग्रेजों को वहां चुंगी देनी चाहिए जो अन्य व्यापारियों को देनी पड़ती है। परंतु बंगाल के नवाब शाइस्ता खां ने सन् 1672 ई. में अपने एक फरमान द्वारा आज्ञा दी कि अंग्रेज कंपनी बालासोर अथवा समुद्र तट के निकट किसी भी स्थान से माल हुगली, कासिमबाजार, पटना राज्यों में भेजेगी वह कर मुक्त होगा। इसी प्रकार सन् 16 ई. में औरंगजेब ने एक फरमान द्वारा आज्ञा दी कि अंग्रेज कंपनी को परेशान न किया जाए न उनके व्यापार में बाधा डाली जाए।[8]

पांडिचेरी में फ्रांसीसियों ने अपनी बस्तियां स्थापित कर रखी थीं। फ्रांसिस गवर्नर मार्टिन ने पांडिचेरी को अत्याधिक समृद्ध बना लिया। सन् 1742 ई. में डूप्ले फ्रांसीसी कंपनी का गवर्नर बनकर भारत आया। उसने कंपनी की व्यापारिक नीति त्यागकर साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया और कंपनी का बहुत बिस्तार किया अतः अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी व फ्रांसीसियों में संघर्ष अनिवार्य था अंग्रेज व फ्रांसीसियों के मध्य प्रथम युद्ध 1744 ई. में आरंभ हुआ 1 ई. में समाप्त हुआ। द्वितीय युद्ध 1749 ई. से प्रारंभ होकर 1754 ई. तक चला एवं तीसरे युद्ध प्रारंभ 1756 ई. से व 1763 ई. तक चला। इन युद्धों में फ्रांसीसियों की पराजय हुई व अंग्रेज फ्रांसीसियों के मध्य संधि हो गई।[9]

इस पराजय के उपरांत फ्रांसीसी कंपनी का व्यापार केवल चंद्रनगर, पांडिचेरी, यनाम बस्तियों तक रह गया। फ्रांसीसियों को पराजित करने के पश्चात अंग्रेजों ने अपनी व्यापारिक नीति में परिवर्तन किया। चूंकि आरंभ में ईस्ट इंडिया कंपनी पूर्णरूप से एक व्यापारिक संस्था थी एवं कंपनी ने व्यावसायिक नीति का अनुसरण किया परंतु मुगल साम्राज्य के पतोन्मुख हो जाने के उपरांत कोई प्रबल केन्द्रीय सत्ता न थी जो कंपनी पर नियंत्रण रखती। ईस्ट इंडिया कंपनी व्यापार के उद्देश्य से भारत आई थी और व्यापार करना ही कंपनी का प्रारंभिक लक्ष्य था परंतु भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति को देखकर कंपनी ने निष्कर्ष निकाला कि भारतीयों की सेनायें तैयार कर, हिन्दु मुस्लिम शासकों को आपस में लड़ा कर और भारतीय राजाओं के पारस्परिक झगड़ों में भाग लेकर भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के साम्राज्य की स्थापना हो सकती है फलतः ईस्ट इंडिया कंपनी ने अपनी व्यापारिक नीति में परिवर्तन कर साम्राज्य विस्तार की नीति को अपनाया। इस नीति का सूत्रपात्र अंग्रेजों ने बंगाल से प्रारंभ किया।[10]

सन्दर्भ

1. गोयल शिव कुमार, हिन्दुस्तान समाचार वार्षिकी, नई दिल्ली, 1974, पृ. 2
2. राबर्टस पी.ई., अनुवादक रामकृष्ण शर्मा : ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास, एस. चन्द्र एण्ड कंपनी, दिल्ली, 1969, पृ. 2
3. गोयल शिव कुमार, हिन्दुस्तान समाचार वार्षिकी, नई दिल्ली, 1974, पृ. 4
4. राबर्टस पी.ई., ब्रिटिश कालीन भारत का इतिहास, एस. चन्द्र एण्ड कंपनी, दिल्ली, 1969, पृ. 3
5. अग्रवाल आर.सी., भारतीय संविधान का विकास तथा राष्ट्रीय आन्दोलन, दिल्ली, 1996 पृ. 6
6. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, 1918, भाग 1 पृ. 211
7. ग्रोवर बी.एल, यशपाल, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का संवैधानिक विकास, दिल्ली, 1995 पृ. 5
8. ग्रोवर बी.एल, यशपाल, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का संवैधानिक विकास, दिल्ली, 1995 पृ. 5
10. ताराचंद, भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, 1918, भाग 1 पृ. 231